अपनी अन्तड़ियों से उत्पन्न, अपने प्राणों से प्यारे, अपने नयनों के तारे का एकमात्र समाज के भय से नवजात-शिशु अवस्था में ही तुरन्त अन्त या परित्याग कर देना, नारी की मजबूरी —— ऐसी ही करुण-कथा कुन्ती काव्य का कथ्य है ।

नर और मादा के संयोग-सम्मिलन द्वारा नवीन जीव का सृजन इस जग नियन्ता की सृष्टि का एक शाश्वत सत्य तो है, किन्तु मिथ्या घोर स्वार्थ स्वरूप छल-प्रपंच के माध्यम से किसी भी अक्षत-यौवना कुमारी के कौमार्य से खिलवाड़ करके गर्भ-धारण पर्यन्त पूर्णतः उसे ही जिम्मेवार ठहरा देना, और इस सभ्य समाज के तथा-कथित नर-पुंगवों द्वारा उस नारी को लाञ्छित करके कलंकिनी, कुलटा आदि शब्दों से विभूषित कर-कर के जीव हत्या, वात्सल्य हत्या एवम् आत्म हत्या तक के लिए मजबूर कर देना, और यदि भाग्य से या दुर्भाग्य से वह अवैध सन्तान जीवित बच भी गई तो जीवन पर्यन्त उसे वंश विहीन, जाति विहीन व वर्ण विहीन अवैध सन्तान कह-कह कर कदम-कदम पर उसका तिरस्कार करते रहना कहाँ तक उचित है ?

ऐसे ही ज्वलन्त प्रश्नों को 'कुन्ती' काव्य के प्रणेता ने कुरेदा है ।

—प्रकाशक

कुन्ती

कुन्ती

राजस्थानी भाषा साहित्य अर संस्कृति अकादमी बीकानेर रै आर्थिक सहयोग सूं प्रकाशित।

संस्करण : 26 जनवरी 1989

प्रकाशक : इन्दर चन्द उमेश कुमार गौतम
अमित प्रकाशन संस्थान
सत्तासर हाउस के पास की गली
चौतीना कुआ, बीकानेर-334001

मूल्य : तीस रुपये मात्र

मुद्रक : कल्याणी प्रिन्टर्स, माल गोदाम रोड, बीकानेर

F (Poetry) by Kalyan Gautam
+ Umeshkumar Gautam,
Near Sattasar House

पानावळी

आचख्यु कवय केचित, सम्प्रत्या चक्षते परे ।
आख्या स्यन्ति तथैवान्ये, इतिहास मिमम् भुवि ।।

(महाभारत अनुक्रमणिका पर्व २५ व २६)

गीता प्रेस गोरखपुर वि स. २०२४ तृतीय संस्करण

मंगळ कामना

श्री कल्याण गौतम राजस्थानी रा पाया अर समरथ क
है। यूं तो आपरी कविता रा घणा विषय है, पर नारी रै जी
रा विविध पक्ख आपरी कलम नै मोत भाव्या लागै। आ
फुटकर कवितायां में जठै नारी रो चित्रण है, उण में नारी म
रै साथै उण रै शोषण रो तीखो विरोध है।

'कुन्ती' कवि रो राजस्थानी में लिख्योड़ो प्रबन्ध काव्य है
महाभारत रै नारी पात्रा मे कुन्ती घणो महताऊ पात्र है। हि
में 'कर्ण' नै विषय बणा'र कई काव्य लिख्या गया है। श्री गौ
आपरै 'कुन्ती' काव्य मे कुन्ती नै एक नयै रूप में देखी है
कल्पना रै सुन्दर प्रयोग सूं कुन्ती रै जीवन रो घटना
जागां-जागां मानवीय पक्ख नै उजागर करयो है। कथा-प्रसं
भाव-व्यंजना, अभिव्यक्ति चातुर्य, रस परिपाक, भाषा-शैली आ
री दृष्टि सूं 'कुन्ती' काव्य आधुनिक राजस्थानी रो एक उल्ले
जोग ग्रंथ बण्यो है। म्हारी मंगळ कामना है कै कवि आप
कलम सूं राजस्थानी रै साहित्य-भण्डार नै घणों समृद्ध बणावै

—चन्द्र दान चारण

उपाध्यक्ष

राजस्थानी भाषा साहित्य अर संस्कृति अकादमी

१३-१२-१९८८

काव्य सूं पैलां दो ओळ्यां

— ४ —

जद-जद भी पाण्डवां री बातां चालै पाण्डवां री मा कुन्ती रो नाव ण कथा सूं आगे नीं बध सकै । महाभारत अर पाण्डवां री कथा नै जाणै जिका कुन्ती नै पाण्डवां री माता रै नाव सूं श्रोळखै, पण श्रैडा कितरा जका कुन्ती रै मुळगनै हिवडै री काठी पीड सूं सिळाण करै ?

जे विचार कर'र देखां तो कुन्ती रो नारी जमारो बाळपणै न् य'र जिन्दगाणी रै छेहला दिना ताईं करडो घणो बळपतो लखावै । रडी काटाळ, झंखाड झाड़्यां, सूका-सूना-तपता-मरुथळ, बज्जर श्रैडी ठोर चट्टाणां, श्रोघट-घाट्यां, विकट पहाड़्यां, अन्तर विरोधी भावनावां री पाताळ नापती खाईयां ऊ भरीज्योडो जमारो उणा जीयो ।

महाभारत-कार-री बरदी चलमऊँ कुन्ती इण आभिजात्य (पण उदेई चाटियोडी खोखली) समाज व्यवस्था रो पुरजो बणर रैयगी, जकी कणाई श्रापरै जलम रा देवाळ माईता री ममता सारू तरसी तो कणाई अणजाणियै–अपराध रै ताण जनमियै आपरै कुंवारै-वात्सल्य नै हेजण सारू झुरी ।

सोळायत माईता परणाई तो सेवट श्रैडी जागा जठै नियोग री डागळी रै पाण टग-टग टूरतै वंस नै बचावणै सारू बा रोगी अनै नाजोगै,

जावश ई न न बणाई सरनार नै हुगम मारी होम री हुनामग्ा वर्गे, बर्ण मार उग रो नाम बणावै,' पण पाणै दाम्पत्य-जीवण में धणी नै उगरन सूं इपर्ण पागरण नै पणमता पाफन्द सूं नीं वा प्राणी ठोकै भाग रैप जावै । उग रै बाळपणै सूं मजोय'र राखियोडी मनूणै मगनी री मुकुमार नगरी रा नमचमाता चितराम उण नै हिये धुड धूड कर'र बळता दीमै । पलका-भपूर्णै वै गैण बळ बळार रा ठिगना हुय जावै । उण नै उग धग्नी नो वज्जर वरगो करडो

पाद-टिप्पणी—

१ अपत्यम् धर्म फलदम् श्रेष्ठम् विन्दति मानवा
आत्म शुक्रादपि पृथे मनु स्वायम्भुवोऽ ब्रवीत ॥ ३'

तस्मांत् प्रहेष्याम्यद्यत्वाम् हीनं प्रजनात् स्वयम्
सदृशाच्छ्रे यशो ववम् विद्धय पत्यम् यशस्विनि ॥ ३९

— तथा —

प्रसादर्थं मया नेऽयम् शिरस्य भ्युद्यतोऽञ्जलि
मन्नि योगान् सुके शान्ते, द्विजातेस्तप माधिकात् ॥ ७

पुत्रान् गुणा समायुक्तानुत्पादयि. सु महंसि
त्वत्कृतेऽह पृथु गच्छेयम् पुन्निणाम् गतिम् ॥ ८

महाभारत आदि पर्व :

गीता प्रेस गोरखपुर : तृतीय सस्करण वि० सं० २०२५ रै पान सख्या ३५६ अर ३५९ माथै श्लोक सख्या ३६, ३७ अर ७ नै ८ :

[illegible] जावै !!!

परण्यां पछै कुन्ती आपरी काजळ-टीकी अनै बेसरिये वाले नै बचावण सारु घणा तड़फा तोड़ै। भयानक रोग सूं कई थोड़ै धणी नै लेय पगै'न वा वन-वन भटकै, उपचार साधै, देवळी नै मिनख-मिनख नै धोकती माथै। जुगत सूं चालै। पाळै। पण कुदरत री लीला नै कुण टाळै। अनग री मार सूं रं उत्तग-छिणा मजभ बोजोड़ी राणी (माद्री) सागै रमती-बेळा राजा पाण्डु रा प्राण-पखेरु उड जावै। माद्री पति रै पारथिव साथै ई सती हुय जावै, पण कुन्ती रा अैडा भाग कठै? उण री इधकार भी भयकर-वन खण्ड मे आभै-धरती बिचाळै सज्जै अनाथ पानूं जीवा री रिछपाळ कारणै माईई खोसीज जावै, नै अबै उण माथै ई अचाणचक पानू-पाण्डवा री सार-सभाळ रो समूचो भार पड़ै।

अठै सूं ई कुन्ती री घणी कठोर भूमिका सरू हुवै। फेरतो तर जेठूता री जळण, ईसकै री आग चररर अर जाळ। नित नूंवा यत्र। कदेई भीवै नै जहर रा लाडूड़ा तो कदेई लाखा-घर सूं स्हाठ

न-बन भटकणा । वारणाविन, अेक चक्रा नै बिराट-नगरी री दायड मन्तावा । छेवट जेठूता री काळी करतूता रै कारणै महाभारत रा घड़ाण मँडई मडता निजर आवा ।

धरम-नीति अनै जुद्ध कळा रा जबरा जाणीकार, महा पराक्रमी प्रबल-प्रतापी जगत-गुरु-वासुदेव जनारदन जैड़ा ग्यानी-विग्यानी री बीच-बचाव नै राजीनामै री सैग चेस्टावा असफल व्हेगी ।

जुद्ध रा नगारा बाजण लागा । मुरा-मुरा'र कुन्ती री काया कांपण लागी । चौफेरी अटावरी-आधी । धकै काई व्हैला ? बिना मोख्यां-'करण मोच-मौच नै अेक-अेक पाण्डु नै मार न्हाखैला, इण में की गोळ नी । उण नै आपरी आंतड़िया री आग सूं ई चौफेरी प्रळय-काळ री धगधगती लाय लपटा बादनी निजर आवी, जिण सूं उण नै भूप-पाण्डु री धरम-मरजादा रो अेनाण-सैनाण ई मिटता सा लखायो । आन्दा रै आगै अन्धारो । छेवट कुन्ती अेकर आपरै सपूतं हाल री हिरदै माथै, उनै जाय पूगी आपरै मोमी-बेटै करण कनै, आपरै नानकड़ै पांचूं-पूता री प्राण-भिख्या मांग ।

कुन्ती री जिन्दगाणी रै अन्तर-मथंन रो ओ चरम-बिन्दु हो जद कुन्ती आपरै पुत्रार्थ वात्सल्य रो आपरै ई मूंडै सूं मोल माग बैठी आपरै परणियोड़ै-वात्सल्य नै बचावण सारू, निजू अन्तस सूं निरबियोड़ै मोभी पण त्यागियोड़ै आपरै उण पूत सूं ई"।

कवई महाराजाधिराज दुरजन सुत, राजन नै भीख देता रै बम में ई जामियोड़ै भूप-पाण्डु री पाटराणी, जुद्धकटा रा भड़रा कुन्ती-

कार, धरती रा त्रिपट-ओपा, महा-पराक्रमी पाण्डवा री मा माता, दी
पर भिलमणीरण । मर्क रै सुभाव सू करोड़-कोमा मातरै, वा मपणुं
सूं करड़ी घणी महीं हुवंता, तद जाय परी'र कर्ठई टुरी हुवंता, करण
भील मागण मारू । पण मेवट फोकर मंजूर करियो हुवंला के प्रेक पर
नै छोड'र बाकी पाण्डवा नै गमरथ हुवता थका भी मन मारिया ।

अरजण अर करण'' 'करण अर अरजण'''' । कुन्ती साद दी
प्रेकूकेऊं वाल्हा । काळजियै री कार । किण नै त्यागं अनै किण
मगेजै । मठै आय'र कुन्ती रै हिवडै री करडी घणी परीख्या हुयी
छाती माथै भाठो मेल परी नै वा छेकड ताई धीजै रो पल्लो पकडि
रैयी । पण जुद्ध निवडिया पछै उण रै धीजै रो बाध अचाणचक टूट
उण बाध रै प्रळयंकारी जळजळाकार मे कुन्ती ऊमचूम सी डूबक-
हुवंती दीसी ।

आखी ऊमर लुकोयोडै उण भेद नै कुन्ती सेवट जळाजळी-
माथै गुप्त नीं राख मकी, कारण उण री अन्तस-आरसी वखत रै बज
प्रहार सू चकनाचूर हुय चुकी ही । अबै उण री आख्या रै आगै रणखे
पोढियोडै करण री सूरत नाचण लागी । जागतै थकाई घडी-बडी उण
सुपना-सा आवण लागा । उण सुपना मे उण रो मोभी बेटो करण सै
केई-केई चिरत करतो दीसण लाग्यो । उण वेळा करण सू महा-बिछो
रा बादळ कुन्ती रै हिवडै मकामा धुमटै हा । छिण-छिण ओळ्यूं
टामणियां दमकै ही । मठै गुण-कथण री बूंदा-बादी नै उद्वेग अर प्रला

मे कुन्ती पूत नै बळतै ···। बोजी घणी बळणै । चौफेरी उण नै करण ई करण उभो दीसै पण वा उण नै पा नी मेरै । छेकडे मूरछा री घटाटोप उण री चेतना नै घाय दाबै । मळै ग्रधारो ···। मागीडो सावठो काळो ग्रधारो । मारो जग ग्रेकाकार । हाय रै कुन्ती रा भाग ··।

कल्याण गौतम

डिंगळ साहित्य सदन

३२ ४०८ चौतीना कुग्रा रै नैडे

मत्तासर हाउस री गळी,

बीकानेर—३३४००१

२६ जनवरी १९८९

अचूम्भो

●●●●

हिवाळो अचल
साखी है
चल साखी
गगा जळ-जमना-जळ
जड-जगम
धरती रो कण-कण
साखी
आखी धरती पै
गिळ्‌डा मारघा
पसरियोडो
मैराण।[1]
पुरखां री रीत
उण जुग सू आज-लग
पुरख-प्रधानव्यवस्था
माण नै मरजादा
काणं नै कायदां विच
रुळग्या है माटी मे

---

१ मैराण—समन्दर

गेई रतन .
हर जुग में,
हुवंता आया है-
छळ-छन्द,
आज भी है
हियं-हिवळास रै ओलै
योई इन्याव,
राई रै ओलै परवत
लुकता आया है
अजू ई लुकै;
तड़फै पण
हर जुग मे
नारी : क्वारी
(वणं जकी परणाऊं
मगेजण मारवणी
पुरख री अरधांगी
परणेता प्यारी)
अेकलड़ी कळपै
लुकयोड़ी रोवै
आखी ई रात ।
काळ अंधारै में
सूनी भीत्यां सू

भचभेड़ी मारता,
गूजे भळ
अन्तम् में
ऊण्डा सागीडा
मरद री-मरदानगी रा–
तन्त वायरा बोल–
"ऊभो म्हैं छाती ठोक
म्हारै थका क्यू डरै ?
पावासर[1] री हंसणी
मिरगा नैणी
गज गामण
केसर वरणी कचनार
म्है मरद मूच्छाळ
म्है थका कोनी म्हे-हार,
करलो खरी इतबार
मरदा री बात
हरनाक ई हरै
आगर निरा आत।"

उण बेळा बै,
मान-मनावणा

[1] पावासर—मानसरोवर

मीठी मनवारां विच
मिसरी सूं मीठा बोल
ऊंची विरदावळियां—
"कीं नीं व्है,
की नीं व्है" रै ओलै
मनमथ[1] री ऊडी गाज
शब्द-स्पर्श
रूप-रस-गन्ध री
मोवणी माया/मूडागै
कंचन-सी काया
आगण विच/चिड़कल्यां री
रळियावणी रम्मत[2]
मन-मैंराण विच
रुड़ी-रूपाळी[3]
उछळती ऊंची छोळ[4]
जाणै किण ठोड़ सूं
किण वेळा/ऊठी ही आंधी
धड़गी जकी पळ भर में
ऊंची आकाश,

---

१ मनमथ—कामदेव
२ रळियावणी रम्मत—मनमोहक क्रीड़ा
३ रुड़ी-रूपाळी—अत्यन्त सुन्दर
४ उछळती ऊंची छोळ—अत्यन्त वेग से उछलती हुई ऊंची लहरें।

पड़ै ही फुंगारां
झिरमिर री कणाई।

नाग्यो इक फटकारो
ओगइन्या मिनखी
उण वेळा/ जाणै क्यू ?
जळवाला नाची ही
आभो भळै गरणायो,

जूनै - जुगारी री
"शाश्वत-प्यास"
जाम्योड़ी सागै ई
स्रिस्टी री रचना रै
उण वेळा/अचाणचक
जाणै क्यू जागी ?
चातकणी चहकी ही
पपैयो बोल्यो–
"आभै सू अरदास
प्यास घण प्यास
धरती री प्यास · ·
इमरत री अेक बूंद ···
— · —— ···· —··· ।"

आभै री ऊरमां

धरती अर वन खण्ड
स्मांई की भीज्यो हो,
समन्दर मे सीपी नै
स्वाती री अेक बूद
इमरत-सी अणमोल

अचाणचक मिळग्यी
जाणै क्यू बणग्यी ही,
मोती वा अणमोल
धीग्गाणं धक्कै सू ।

"गजब रे गजब
फाट ग्रे धरती-मा
थारै मे समाऊ

अबै म्है
कठै जाऊ ?
मिटै है मरजादा
मानखै री म्हारे ताण,

सक्कल म्हारी सारी
म्है छू/सखन-सवांरी
हे म्हारी धरती-मा !

हनै ठा नी/ थू ई जाग,

पू भी गो भीजी
उण दिन गागोडी,
इन्दर जद बूठो
आभन रै आंगणियै
जळधारा नाची जद,
इमरत-सो बरस्यो तद
वनखण्ड में हरख्यो हो
गागी थूं धरती-मा !
कांई हुई इण में हाण ?
म्हनै ठा नीं/थूं हो जाण"

*　　*

वय-सधि री वेला विच
जोबन रै उफाण री
चूटियो-सो चीकणो[1]
कवळी रै कवळो
काचो झाग/निजू-
आतडियां रो आग/जामण रो पेट
निज देही रो अस
कीकर करोजै/भळै
ईया विधूस ?

---

१. चूटियो सो चीकणो—ताजा मक्खन के समान मुलायम

मिनख जूण री
सलूणी मवेदना सू
मैराण-मन्थण[1] बिच
माडै[2] नाधियोड़ा
उफणतै जीवन रै–
रतनाकर री छोळ रा
पैलाई रतन्न !
कवली कूपळिया बिच
जाम्योड़ा ग्रैडाई
अलेखू /अण खिरया फूल,
मिस्टी मे/पाख्या बाग
ग्राया नी ग्राया,
पिरथो री पून रो
पैलड़ो झोको
लाग्यो नी लाग्यो,
बणा दिया जावै
काळ कलेवा,
म्हारी जै निदूका
जाणै किण डर सू ?
घूरै ग्रर घूटै मे
। हो जाना

सूगां, सूगणी/ अकूरड़्यां माथै[1]
मोयांने पांटा
घिणाणी अवरै नुं
माख्यां भीन'र
जाड़्यां भीज'र
जा रै उतरूमा कर'र,
मुगळीजगा पछै जद
जोबन रा प्रथम-फूल
हाड़ी में मानियोड़ा
हेमाणी पिण्ड-सा
रुई में पळिटियोड़ा
हींगळू री ईंट-सा
पण कवळ सू कवळा,
माखण सू चीकणा
लाखीणा रतन्न
करै कुण जतन्न ?
भख बणै गिडका रो
अणमोल मानखो
मरजादा सारू
उण जुग सू/आज तक ।

---

1 अकूरड्या माथै—गन्दे कचरे के ढेरों पर

फिट रे कायरां
चांपाया चांखा सेग :
पसेरू आच्छा है , ,
दो पाया थारे सू
इण ठांड आया तो

धिक्-धिक् रे मानखा
धिक् थारी मरजादा
चेत कर/चेत कर
निखिल ब्रंमाण्ड रा
सर्व-सिरै प्राणी,
मैं जीवा सू सातरी
थारी जिन्दगाणी

सगळा सू सखरा
बण्यो थारो पीजरो

ज्ञानी-ध्यानी-विज्ञानी
अक्कल रो थू पूतळो
जळ-थळ-अनळ-शून
हाजरिया थारा
अचम्भा करै आज
नौ लखलारा
देख थारा पगलिया
चांद री छाती पर,

कांपै आज काया
मंगल अर सुक्कर री
(पण) धरती पैं जीवै
जूण थू कुक्कर री !!
अेकही अचूम्भो !!!

भळै अजू / वयू जीवै
विस्फोटक-बम बणातो
सम्प्रदाय-बिस बेलडिया नै
जड्ड-बरण-व्यवस्था
न्यात नै नैतणो
औसर नै मौसर,
अणमौत मरणो

साठ कळी रा घाघरा नै
गज-गज लाम्बा घूघटा
झंझरीदार जाळिया
चौफेरी चौबारा/तेलड़ी खाईया
कोट नै कगूरा/जूनै जुगा रा
जीरण परकोटा
कुण नै अब चाईजै ?
भळै थयानै चाईजै ??

त्रित-जुग गू/माज मग

वासना रै वासतो मे
अेकै ढाण न्हाठतो[1],
भोगा मे भुंवै नित
भटभेड़ी खावतो,
साम-दाम /डण्ड भेद
नीत्या नित अपणाय
काची नै कुंवारी कोई

कंचन-सी काया रा
लावा मेग लूटतो,
अणछक रस रैयो
तोई नर निरमळो !!
अेक ही अचूम्भो !!!

दूध्रा आप धोयोडो
वण्यो मटवा सूठ-सो
दोप छेकड़ देवतो—
'नार व्यभचार है'

हुई पण किण रै पाण ?
पूछै भळै बपू कोई
पवग-पान भरियोडो
गळाटूप/व्यवस्था विच

१. अेकै ढाण न्हाठतो—त्वरित गति से निरन्तर दौड़ रहा है।

मुगती नै बेचारी
मड़ां में नाना रूं
मिनखां रै बै मारो
पुरस-[illegible],
ममतारै बीहड़ ?
कुदरत रै घर मुं दें
मारो.......!
दिराड़ मारो ।
गजब रो अधारो !!
मिनख ।
थारो मिनख पणो
कदै मांच हुवैला ?

★ ★ ★

दूजो पर्व

अंधारो

इकोवडी इण/व्यवस्था मे
अधारो ई अधारो,
नितूकं रो ऊनरे
ऊपर सू अधारो,
उण जुग सू /आज लग
अटल है अधारो।
ब्रिन्दा रै महला विच
विष्णु बण उतरियो हो,
छावयो भळै चांफेरी,
धीव माथै ई जद
च्यारु ई मूडा सू
चांफेरी अधारो,
धीवर री धीवडी[1]
पण / रांई जद नाव विच

---

[1] धीवडी—मत्स्यगन्धा-सत्यवती व पाराशर प्रसंग

मुगळीजं वेनारी
पट्टी में दाणा ज्यू
पिसती रै वै नारी
पुरुष-प्रधानव्यवस्थानें,
नमस्कारै कीकर ?
कुदरत रै घर मूं ई
नारी ......।
छेकड़ नारी ।
गजब रो अंधारो ।।
मिनख ।
थारो मिनख पणो
कदै साच हुवैला ?

★ ★ ★

दूजो पर्व

अंधारो

दकांवडी इण/व्यवस्था में
अंधारो ई अंधारो,
निलूकै रो ऊतरै
ऊपर सूं अंधारो,
उण जुग सूं /आज लग
अटल है अंधारो।
बिन्दा रै महलां बिच
बिष्णु बण उतरियो हो,
झाबयों भळे चांफेरी,
धींव मार्थे ई जद
च्यारू ई मूडां सूं
चांफेरी अंधारो,
धीवर री धीवड़ी[1]
पण : कोई जद नाव बिच

---

[1] धीवर री धीवड़ी—मत्स्यगन्धा-सत्यवती व पाराशर प्रसंग

उ[illegible] री मधारगी,
पेटा दै पैरमिन
मरूतं जोरन दे,
तेज रो पारखन
कुंवारो कौतूहळ
कर बैठ्यो पान्दाण
मनडै रै/मैराण मण्डल
वय-संधिरी वेळा रा दै

मटल उमटता ज्वार
सलूणां – सागाड़ी
सावठा, सुकुमार,
जौवन रो अंकुरण
पण / काचोड़ी कचनार,
सलूणै सुपनां री
भोळोड़ी-बहार,

दुरवासा रो दियोड़ी
मोवणी माया बिच,
केसर-सी काया पै खिचतोई आयो
अगणूं खितिज मू
ै ोक रो,

भळै मागीडो ग्रधारो
.... ।

समरथ नै काई दोष
उण जुग सू /ग्राज लग
पाप नै/ग्राप रै
ग्रोलै यू लुकावता
मिथक/ग्रर रूपक-रच
ग्रण माग्या/ग्रण चाया
पूत दे जावता
नारी नै कुवारी नै
माडाणी जाणै बयू ?

ग्रन्तरीख छोड यू
सैस-किरण धारी यै
सूरज-सा देव भी !
धींगाणै - धवकै सू
केडो ग्रो ग्रधारो ।।

सूरज रै सैमूण्डै
सूरज रै नाव रौ
मावार्ता ग्रधारो,

उगरघायो देख दिन

द्वापर-सा जुग में,
भूप कुन्तीभोज रै
महलां में अंधारो/

लावा मैं लूटग्यो
अखन-कुंवारी रा,
केसर री क्यारी रा

भाग री मारियोड़ी
हिरणी ज्यूं झांकै,
थर-थर कांपै
अण चोति/वीती
धकै काई हुवैला?

पूरबला लेख/सोनै री थाळी विच
लोहै री मेख,
भाग रै स्राप सूं
हुयो काई कामण ?

हे म्हारी जामण !
अळगो आज थूं घणो
अैडी अबखी/बेळा में
थारै बिन/किण नैं पीख

हे म्हारा बाबनिलया !
जलम रा दैयाळ,

ओधारा इण माईनां नै
आवै करडो झाळ,
जलमनी नै/वयू म्हारी था
वाझड़ै री गोद ?
वीर ! जामण जायो कोनी ""
करै कुण विरोध ?
रावडी वधाय लेतो
सिछपाळ रो भार,
अणमणी यूं / देग म्है नै
पूछतो हर बार–
"म्हारी जामण - जाई धन्नै !
लाग्यो कया रो मोच ?
चान्द-किरण-सी बेनड म्हारी
वर [illegible] पसोम
[illegible] तो इमरत लाऊ

वीरै रै नाव सूं
पड़ै जळजळा-झांवळा[1]
दूर ऊगता क्षितिज पै
निरवाळो न्यायो प्रिया
प्रिया हो बिलमणों
वीरै नै, अडीकणो
वीर जो ' हो कठै ?
प्रिया ' पीळै पोतड़ियै
खोळायत ही अठै ।
टप-टप टपूकडा
सीपां दोऊ डबाडब
कुरजा ग्रेक/कुरळाई
आभै में अचाणचक
अण खूट अमूझो
घुटण अर ऊमस
अेडीऊ चोटी लग
वाळा सा बवै,
कीड़िया-सी खावै,
कदळी-सा खम्बा
केसर वरणा

१ वीरै रै नावसूं पड़ै जळजळा झावळा—डबडबाई ग्राखों के मार्ग भाई की काल्पनिक ग्राकृति के बिम्ब ।

घडी-घडी कांपै ।
गंवाळी ऊभी व्है,
थर-थर धूजै
हिवड़ै मे/ छिण-छिण
हिलूरां उठै,
माय रो मांय/ओ कुण ?
घाटो-सो मींमैं.
काळजियो चूंटै,
सास नी मावै
हिवडो करै/धक्-धक्
दोऊ पग धूजै,
मागडल्या मिनं
उवकारचा घावं
डोळा-मा नीसरै,
भावी रै विचार सू !
माईता रै नाव सू !!
अणजाण्या अपराध सू !!!
अेवई अणेसो उण नै
पूर-पूर खावै—
"वचन तेज पुरुष रा
रीता कद जावैला !
दूध अहर आवैला
म्हारी कवारी कूख मै ।"

तीजो-पर्व

पीड़

धीग्या थंई दिन
पगपाश महीना
भूतो नै सीगी
नु फतो नै छिपती
आळा नै टाळा मे
ऊंचै आभल महला
अेकलडी फळपै,

सुसियै ज्यूं कान दे
हिरणी ज्यूं झांकै,
भारी दोघड-चिन्ता
ऊभी ही कांपै
पळ भर में पळको
जळवाला/झळफळ ज्यूं[1]

---

१. जळवळा झळफळ ज्यू —बिजली की कौंध के समान चमक कर तुर छिप जाना

बादळ बिच लुकै

बावल री मींट सूं ।

पण/पेट रो पाप
रुई-पळेटी आग
सेवट/ऊपर तो आसी
चमको दिखासी

अंधारो जद अेकर
घणो-घणो छावै,
घुटतांई जावै,
घिर-घिर'र आवै,

चौफेरी सावठो
पाप रो बाप ओ
आखी ई रात
ै री जात

[illegible]/[illegible] दिन में
[illegible] रो मामा,

केसर री क्यारी में
नागरियो पराग
मनुचीतर्ण मार सूं
नागइल्या मुळगो
पसरया/भळै मुकणी,

मायड़ रा मोसा नित
माई-मा जेरा,
जळता नै बळता
बोल्या रा बाण
बेळा कुबेळा
वर्वै तीखा/तीर-कुवाण,

घुड़की नै भिड़की
बोल री कटार,
तीखी नै चुभती
हुवै हिवड़ै पार
प्रिया रै नितूकी ।
धीजो पण राख्यो
धीवड़[1]-सूरसेण री

१. धीवड़—पुत्री

जाग्यो द्वन्द मन में
"मायड तो मायड।
जामण सा बद ही ?'

भळै/माठो रै माठो।
मन/फोभा घण सोंनै
पग/न्हागे निस्कारा।
नद/अन्तस् गू गू ज्यां –

"अयँ इण पाप सू
फोभो घणो सेस टीड़
निजू आतम घान रै

सागं भलै हुवेला
मोटो घणो पाप रै
इण दूजै जीव रो"

छीजता छिण-छिण
घड़ी-घड़ी घुळतां
तिल-तिल कटता
आई छेकड़ आई
वेळा-पुळ सागी,

अणथाग अमू जो
आभो गरणायो
ऊंचे/श्राभल-महला

[illegible]/[illegible] [illegible] मैं
अपार री माया.

[illegible] री बधारी मैं
नागरियां पराग
[illegible] मार मूं
नागड़त्या मुळगी
पसरयां/मऊं भुकगी,

मायड़ रा मीठा नित
मांई-मा जंडा,
जळता नै बळता
बोल्या रा बाण
बेठी कुवंळा
वर्वे तीखा/तीर-कुबाण,

पुडकी नै भिड़की
बोल री कटार,
तीखी नै चुभती
हुवे हिवड़ै पार
प्रिथा रै नितूकी ।
धीजो पण राख्यो
धीवड़[1]-सूरसेण री ·

१. धीवड़—पुत्री

प्रिया पूत जायो,
बाळापण आयो
पीळं-पोतड़ियां
दिनमणी ज्यूं दीपै,

चौफेरी आभा
चकाचूंध छाई,
पळ भर मे पांनड़
वाजी पुर वाई ।
झप-झप रा झपका
भळं/दम्भोळी नादां
सागे/जळवाला नाचै,
नौबत-नग्गारा
सागीड़ा वाजै,
ऊंचै अक्कासां
गिड़-गिड़-गिड़ गूंजै,
मधरो रै मधरो
भळं/वायरियो वाजै
धरती रै आंगण पै
मोतीड़ा वारै
जाणै कुण बैठयो
ऊंचै अक्कासां !!

★ ★ ★ ★

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पगड़ी मान बाळो

पर पाधर¹ पसारी

नदी-मझार धारा

झिलमिल-सा झांकै

दोऊं किनारा.

डूबो गेल अंदो

मथै मळ' काई

गीली हुय झांकै

भागी वन राई

वींले पग कीकर ?

★ ★ ★ ★

प्रिथा/आख खोली

घडी दो घडी में

पाई ठौड़ खाली,

हिरणी ज्यूं झांकै,

लाम्बा घण ऊंडा

---

१. पाधर—सीधी

चौथो पर्व

नूंवो रासो

तप्यो/आगी ऊपर
जीवण-मरुथल,
तपतार्ई जावै
मूनी दिसावा
गूंजै ऊंटा अन्तस्
पडधुन टकरावै
पूठी धिर ऊंचा
मूनां भींत्या सूं
भचभेडी खावै।

आम्या रै आगै
पडबिम्ब नाचै
जूनै-जुगा रा
बोदा चितराम
चेते भळै आया
झीणां अर झीणा

माडचा/ऊधा आखर
म्हारी लिल्लाडी,
कोझो वेळा-पुळ
वेमाता गैलो
हुवै भळै कीकर
कारज कोई सखरो !
छोडचा महल-मिन्दर
जगळ विच वामा,
वनखण्ड विच भटक्या
पाण्डु-सा राजा,
सोधी जीवण आसा
कटै राग कीकर/पण
प्रीतम रै तन रो
लेख मे मेख/अर
खूटो नै बूटी
कीकर कद लागी ?
मल्लै झाझरकै
मथम/भळै टूटो,
वज्जर पळगळियो
क्यू/ मनमथ गरणायो ?
उफणी पण घोळा

मन-मैंराण गाज्यो
घटाटोप छाई
उतुंग-आभै ।

धर्क कांई व्हैला,
वण काळ आई
वयू/होणी री आंधी,
तद/आलिंगण वांधी
वयू/ल्होड़ी राणी नैं[1] !
उन्मत्त वेळा/भळै
हुयी छीण काया
बुझी जोत झिण मे,
वनखण्ड विचाळै
डाढया- गरळाया
ऊभा सात प्राणी

★ ★ ★ ★

छाई अधारी
आँख्या रै आगै,
आया ऊण्डा हेरा
घटा-टोप छाई,
हिवड़ै—अवकासा/घिर-घिर' र आई,
डूबी / दुक्ख-दरिया / विच
पारथ्थ माता ।

---

1. ल्होड़ी राणी-छोटी राणी (माद्री)

पूछो जात म्हारी"
मुण/रोसा उफणतो
राती कर आंख्या
उठयो भीव-वाकां,
भळै/पारथ सम्भाळिया
धनख-तीर तीखा,
पण/गुरुवर/उणा वरज्या
थे हालो दादीमा !
वेगा-थका-सा"
मुणताई न्हाठी
भूप-पाण्डु-पाटराणो
सुध-बुध सैं भूली
गाभै-लत्तै री,
लाटा-सी ऊपड़ै,
हिवडै विच्चाळै
चेनै भळै आयो
भोदै नै पायो हो,
केइ हळाहळ।
घट्टी-सी घूमै
माथै-विचाळै
आंख्या चकराई,
मेंग/र'वाळो कापो,

यों ! गाजड़ यूं बोलै-
"है कोई जोधा ?
मो साम्हीं आवै
करतब दिखावै
कोई जुद्ध - कळा रा
भळै/म्हारै जेड़ा।
वपू/फूड़ो पोमीजै
प्रिथा-पूत-पारथ,
म्हैं ऊभो/अडीकूं
अक्खाड़-मज्झो
मल्ल-जुद्ध सारू।
हूं ! भीवै नै मसळू
का अरजण नै झालू,
सभा वीच उण नै
हूं/भर-भर पिछाड़ूं
आओ जोध कोई
मो-साम्ही आओ
दुरजोजण पैलां तो
हाजर म्है ऊभो,
नेड़ा तो आओ,
ओसाण आया
भळै/सांची वताऊं,

कोई कारू-मुत सू ।"
सुण/कोप्यो घण भारी
वो/जोधो दुरजोजण,
रातो कर आख्या
त्यौरिया चढाई
धकै/बोलण की चायो
पण/धाकड दड क्यो
इक/नाहर विचाळै,
सभा मज्झ छिग में
वो/केहरी ज्यू कूदयो,
त्यौरियां उण बदळी
अर/बादळ ज्यू गाज्यो
गहरो रै गहरो
बोल्यो–
"जात म्हारी !
अै दोऊ भुजा है
हू/मिनखा-देह पाई
है/मिनख जात म्हारी,
लज्जा नीं आवै
ऋषिवर/पवख-पातो
जटा-जूट गूथ्या
वण्या तेज धारी,

हुया, आकळ-वाकळ
पाण्डु नैं कैंरू
तावड तोड न्हाटा
कोई/औखद सारू,
कोई पखो
झळैं छिण,
जळ रा दै छाटा
कोई/लायो विदुर नै
करैं दवा- दारू
"उठो मात जागो !
कैय/रोवै सहदेवो,
पण, मायड अचेतै
पडी मज्झ-मण्डप
हुई जड़ काया,
रोवै दास-दासी
ज्यूं/सरगा सिधाया
पाण्डु-पाट राणी ।
पेरों दै ऊभी
नारया/कुरु-कुळ री
उड्या होस भारी
कोई/नाड़ी नै पकड़ै,
कोई/मुरछा उडावै
दे/पाणी रा छाटा,
दिल/धारदियो धानै

[illegible] मानव [illegible]
रह्यो तेज म्हारो,
[illegible]/कांच कुण्डळ
निज इतिहास सारो,
म्हारो,[illegible] मे
उफणो धर्म म्हारो,
पण/थे विप्र जाया
था नै/के कैयू,
कुवा भळै न्यारा,
घणी-जोध आओ
पूछो-जात म्हारी,
म्है छू
सूत-पुत्तर,
पण/पारथ्य/किण रो जायो ?
भीवो कठै सू आयो ?
जुधिठर धर्म-धारी
जलम्यो जग कीकर ?
हुवै हिंव्वत/तो बोलो
पूछो भळै कांई ?"
रही बात आधी
हा-हा कार मचग्यो,
सभा बीच छिण मे

पांचवों पर्व

महा समर री पूरब-सिञ्झ्यां

महाकाळ रा
धूंसा[1] वाजै
कुरुखेत बिच
भगळ[2] कसै भड
खड-खड, खड़-खड
खेडै रथ नै[3],
धम्म-धम्म
धूजै पग धरणी
जत्थ-जत्थ
मैंगला[4] गुडन्ता[5]
सुण्ड हिलावै

१. धूंसा—नगारे की तरह का बहुत बड़ा वाद्य-यंत्र जो भैंसे के चमड़े से मढ़ा जाता है।
२. बगल—कवच
३ खेडै रथ नै – रथों को दौड़ा रहे हैं। (पृथ्वीराज इन बेलि में भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है)
४. मैंगळा—मद गळते हुए—मद मस्त हाथी
.. . रहे हैं।

पण/हार्ने गी डोलै

कुन्ती री काया

हुयां अंड़ो कांई ?

भळै/छिण भर रै मांई

वयू/बेहोसी छाई ?

हुयो/हत-प्रभ सो

कळपै/मन्न मांही

डूब्यो/सोच समंदां

तपसी मुत स्याणों

विदुर-सो ज्ञानी

करै उपचारा।

★ ★ ★

बागां[1] खींचै
बाजै नाम्हां केवागां री
हींस गुमीजैं[2] केकाणां री

रथ-दळ/गजदळ
बाजि नै पैदळ
चतरंगणी-चमू
महा जुद्ध/रणांगण मांडै,
व्यूह रचै नै
बधै भुरजाळा[3],
सिरत्राण[4]/बगतरा[5], जमदढ[6]
पाति-पाति[7]/पळकै
धारजळ[8]/हाथ-हाथ मे-
गुरज्ज, गदा/गुप्ती-कत्ती[9]

---

१. बागा– बल्गा, घोड़े के जबड़े में लगाकर सवार द्वारा पकड़ी गई रस्सी)
२. हींस गुमीजैं– तेज दौड़ती हुई अश्व सेना में घोड़ों के नथुनों की आवाज
३ भुरजाळा– विशाल भुजाओं वाले योद्धा
४. सिरत्राण– सिर रक्षक कवच
५ बगतरा–देह रक्षक कवच
६. जमदढ– कटार (यम दंष्ट्रा)यम की डाढ
७. पाति-पाति– प्रत्येक पंक्ति में
८. पळकै धारजळ हाथ-हाथ में– प्रत्येक हाथ में तेज धार वाले दुधारे खाण्डे चमक रहे है।
९. कत्ती– कर्तरी(कैंचीनुमा शस्त्र)जो अत्यन्त प्रचीन काल में युद्धों में काम आता था (दुर्गा सप्त सती तक में इस शस्त्र का उल्लेख मिलता है।)

वागा[1] खींचै
दावैं नाग्दा हैवानां री
हींस सुणीजै[2] हैवाणां री
रथ-दळ/गजदळ
वाजि नै पैदळ
चतरंगणी-चमू
महा जुध/रणथाणा मांडै,
ब्यूह रचै नै
धर्में भुरजाळा[3],
सिरत्राण[4] बगत्तर[5] जमदढ[6]
पाति-पाति[7]/पळकै
धारूजळ[8]/हाथ-हाथ मे
गुरज्ज, गदा/गुपत्ती-कत्ती[9]

---

1. वागा– बग्गा (घोड़े के जबड़े में लगाकर सवार द्वारा पकड़ी गई रस्सी)
2. हींस सुणीजै– तेज दौड़ती हुई अश्व सेना में घोड़ों के नथुनों की आवाज
3. भुरजाळा– विशाल भुजाओं वाले योद्धा
4. सिरत्राण– सिर रक्षक कवच
5. बगत्तर–देह रक्षक कवच
6. जमदढ– कटार (यम दंष्ट्रा) यम की डाढ
7. पाति-पाति– प्रत्येक पंक्ति में
8. पळकै धारूजळ हाथ-हाथ में– प्रत्येक हाथ में तेज धार वाले दुधारे खाण्डे चमक रहे हैं।
9. कत्ती– कर्तरी (कैंचीनुमा शस्त्र) जो अत्यन्त प्रचीन काल में युद्धों में काम आता था (दुर्गा सप्त सती तक में इस शस्त्र का उल्लेख मिलता है।)

वागा[1] खींचें
खाजें नाग्या केकाणां री
हीम गुणीजें[2] केकाणां री

रथ-दळ/गजदळ
वाजि नें पैदळ
चतरंगणी-चमू
महा जुद्ध मण्डाणा माण्डै,
व्यूह रचै नें
कमी भुरजाळा[3],
सिरस्त्राण[4]/अगरला[5], जमदढ[6]
पाति-पाति[7]/पळकै
धारूजळ[8]/हाथ-हाथ मे-
गुरज्ज, गदा/गुप्ती-कर्ता[9]

---

१ वागा– वल्गा (घोड़े के जबड़े मे फसाकर सवार द्वारा पकड़ी गई रस्सी)
२ हीस गुणीजें– तेज दौड़ती हुई अश्व सेना मे घोड़ो के नथुनो की आवाज
३ भुरजाळा– विशाल भुजाओं वाले योद्धा
४. सिरस्त्राण– सिर रक्षक कवच
५ अगरला–देह रक्षक कवच
६ जमदढ– कटार (यम दंष्ट्रा) यम की डाढ
७. पाति-पाति– प्रत्येक पंक्ति मे
पळकै धारूजळ हाथ-हाथ मे– प्रत्येक हाथ मे तेज धार वाले दुधारे खाण्डे चमक रहे हैं।
...ी (कैंचीनुमा शस्त्र) जो अत्यन्त प्राचीन काल मे युद्धो मे काम
...र्गी सप्त सती तक मे इस शस्त्र का उल्लेख मिलता है।)

सांगी,खग[1]/त्रिमूळ सम्हाळै
ढल्ल, भल्ल[2]/तीखा त्रिबंका
अग्नि-बाण गज
वण्यां भयाणक,
महाकाळ-सा
अड़्या हरोळां[3]
सिलहा सू/गरकाव हुयोड़ा[4]
आवध कसता/मद-छकिया वै
महाजुद्ध नै
खड्या अडीकै।

* * * *

बीजै पाखै[5]/नदी तीर पै
अन्तस-तळ नै
भेदण आळी
वार्तां चालै/मा-बेटै बिच,
आज मिळ्यो

---

१. सग्गी, खग— सांग व खड्ग नामक शस्त्र
२. ढल्ल, भल्ल— ढाल व भाले
३. अड़्या हरोळां—अड़कर सेना की प्रथम पंक्ति में खड़े होने वाले वीर योद्धा
४. सिलहां सूं गरकाव हुयोड़ा—ऐडी से चोटी तक कवचों से आवृत्त(ढके)
५. बीजै पाखै—दूसरी तरफ

निस्संग[1] तीर पै
संध्या करतो,
जापै में ई
बिछुड़्यो हो जे
रतन अमोलक।
इण वेळा मे/माघ भराती
भाण-देव[2] री,
नदी-नीर नै
लेकर कर में,
दीन वचन हूँ
माता बोल्या
गुपत-भेद री
बात बखाणी
बिगत बार
पण/बार-बार,
अर कह्यो—
पूत !
तू ही है अब
पालण जग रो।

भीवों, अरजण, थूं
जुधिठर मू भी
जेठो-बेटो
थूं है म्हारो।

इण समाज रा
मोटा-माणस
मोटी/मरजादा रा वेली
केई अमोलख
रतन रुळावै है/माटी में
थारै जैड़ा।

आ बेटा !
बिलखै थारी जामण
उण दिन सू/जद
चीर बादळा नैं प्रगटचो थू[1]
भाण-देव-सो
सभा-मज्झ
दम्भोळी-नाद कर
मल्ल-जुद्ध

१. चीर बादळा नैं प्रगटचो थू - तू भीड़ रूपी बादलों को चीर कर प्रगट हुआ था।

पाण्डव-दल री,

महासमर मे/अभयदान दै

उण पाचा नं/थू विक्रम ज्यू

* * * *

वरसा/गृ ज्यं

घुट्यो रयण-दिन

ज्वालामुग-सा

फुटपड्या था,

किण रो हूं जायो
कुण पाळ्यो
कुण दियो मान
कुण है ठुकरायो,
बस विहूणों / भटक्यो जग
केई भाठा भांग्या,
सूत-पूत/सुणता-सुणतां
मैं/जलम गमायो,
दोय घड़ी अब सेस;
बीतग्यो बेळा सारी
कुरू राज रै कारण ।
अरपित काया म्हारी
भल जाणी म्हैं रीत
नीवत काई
रिपु-दळ री,
दुरजोजण रो पवख
निवळ करणै री/छळरी
विष्णु/बण्यो भिखारी
चळी-भूप
बारणैं ज्यू,
त्यू/जिष्णु माग लेग्यो,
छळ-छन्द/कोच-कुण्डल

रिछपाळ मुतरी करणं ।
मायड़ अम्है पधारचा,
नेह रा वेवाती वाळा,
अब/हेज कैड़ो उमड़्यो
परिणाम मोच्या रण
पण/करण जीवता तो
मिच्छ्या न पूरो व्हैल
जदुवेन्द्र/चाये त्यागो
भल नेह/मरकटधज रो
अधिरत्थ-सुत नी त्यागै
पण माथ/दुरजोजण रो ।''
पड़दा/हियै रा खुलग्या
सुत रा सुणी/जद वाणी,
महाकाळ/कुल पै नाच्यो
मनड़ै मे/अैड़ी जाणी ।
रोवै/हियो घण रोवै
मुळगै हो/पीजर मारो,
देवळ वणी-गो ऊभो
मूंडै,वाई बोलै ?

* * * *

रिन्ध-रांही में
अंध-कुवां, भळै,
अध-कुवा बिच
लोलां-लकड़ी,
धुकै रयण-दिन
हियै विचाळै
माय धुधावे,
आसै-पासै
धु वो नी दीसै
अध्ध वळी
भळै/अध्ध बूझी-सो,
सुळगै हियो
वस/वरसां सू सुळगै
वळणो ई चावै
वळ नी पावे,
अैड़ी ई गत की
कुन्ता रै चित्त री
कुन्तां रै तन अर
कुन्तां रै मन री
झाकै ही ऊंची
सुन्न/गिगन मे
पल्लो पसार्‌या

आगी वन में
लाग्यां दावानळ
धू-धू करतो/लपटां काढ़ै
दसू-दिसा सू
वधतो ई आवै ।
कवळी-म्हानी/कूंपळ म्हारी
पान-फूल-श्रीखड़ल्या लीली
डाळा लीला/सघन कुञ्ज-सा
वण्या सातरा/ऊभा हरसै
आखै वन विच / सबसू सखरा
गाछ अजूवा/निज वाखळ रा ।
आध्या मे ज्यां
अडिग/अड़े नित
तूफाना विच
चुस्कै नी मुस्कै,
वज्जर ही चाये
माथै वरसो
सेंठा रै सेंठा/मोटा दरखत
दावानळ नै/क्यूं तेड़ै है
निज मिन्छ्या सूं ।
हे भगवत् !
क्यूं/मडियो ओ भ्रम

बाटंग्मन स्यवाणी चावै
माताणी थू/इण धरती पर ।
माताणी नै जाईनो
मांगी माया नै
न्यारी ई धूरा री
मांगी बेटा
काल दिनरी !!
★ ★
काल दिनरी,
रण जद छिडसी
तीरां-तीरां मू छेदैलो
माताणी के/निज अनुजा नै !!
अणहोणी देखूली अैडी
हू कीकर !!
हे धरती मा !
थू/ठौड म्हनै दै,
वरुण-देव !
लै / म्हनै लुकालै,
जलम दुख्यारी
इण दुखिया नै
लुक जावण दै—
—थारै घर में ।

डामर वाग
गल्ला गुग्ज-गुग,
गुग्ज शा-न-अनि-गो छिन में
फळगळियो/हियड़ै पछतायें।
"क्यू उतर्यो ?
गुगमें क्यूं वरस्यो ?
ताग्ँ जहर/नीम सूं कड़वौ
क्यू बोल्यो ?
जामण रै आगै
जिदग्यानी में
प्रथम बार ई।"
गैडम्बर-घण[1]
घुट्या/हियै विच
उठैं धुंवारो
मांय धुंधावै

डम्बर घण—घटाटोप बादलों का घुटना (दुख रूपी बादलों की गहरी
न घटा उमटना)

मटक नैण
लागै निरखाण,
डग-मग करता
पग दाऊ मैल्या
त्रिया/त्रिया रै
भार दबयोड़ी
गरकी आगै ।
पड़यो चरण पर
दौड़ करण नद
उठा पून नै
गळै लगाया,
हरख्या क-क
घणै गळगळै/हियड़ो उमग्यो,
नैणा रै मारग
बह निसर्यो/अणथाग
वाछळ-नीर हियै रो,
हियवया बधग्यो
दोऊ ई पासै ।

* * *

नेवट धीजो
धार हियै विच,
चरणा री रज
लगा भाल र

बोल्यो यूं ठीमर वाणी[1] में–
"जामण!
अटल प्रतिज्ञा आ है
'पारथ-करण काळ-सम लड़सी'
जग जाणै है/इण वातां नै
वचन लोप नीं
करण हुवैला
चांद-सूरज चाये
मारग वदलो
करण वचन नी
कदै फुरैला।
पण/पारथ नै छोड
लारलै/च्यारां माथै दया करूं ला
महासमर मे
पड़ै दाव विच–
आप डरूंला/उण च्यारां सू,
गळी काढ़ नै/करूं किनारो
सत्त-वचन जामण सुण म्हारो।
गुपत भेद
गोपन ई राखै,

1. ठीमर वाणी–गम्भीर वाणी

[illegible]
मांड़ो हुयग्यो
महल सिधावो।

गंग वान
गावळ ई ह्रौला
रण में/उण रो
मद /के बिगड़ै,
द्वारिकेश री
मिळै देसना
धिन भाग उण
मरकट-धज रा
माधो जैडा
मिळ्या सारथी
कुण अकाज
कर सकै उणा रो।"

कैय/नीचो लुळ
चरण-चूम,
सटकै सू/पूठो धिर्यो
मिहिर-सुत,
टग-टग करती
टुरी प्रथा पण
घण पछतावै
लै निस्कारा,
नैणां रैं/मारग हिवड़ै रो
वाछळ-नीर
वहे इक धारा।

❀ ❀ ❀ ❀

नानैं निरवाळी
उन्मादण ज्यूं।

अरि-दळ में
गळ-बळ सागीड़ी,
जीत गेयरो
पाण्डव लीधो,
जुद्ध रैस ' पण
मोटो दुष्मी
अजू जीवतो
ज्यान बचा यो
न्हास्यो जावै
ओरण-जोहड
ताळ-तळावा,
लुकतो न्हाठै
उज्जड–बीहड़
कैई ठौड़ पण
जोयो करड़ो
पाण्डव दल-रळ,
भीवसेण री
आंख्या सू
चिणगार्यां छूटी

दुरजोजण जद
ऊभो दीस्यो
बीच खेत मे ।
मार कड़कडी
भीवो दानो
केहरी ज्यू
कुञ्जर पर झपटै
करड्यो झपटयो,
अन्त समै/घुघ्घायो करड़ो,
आंख्या, अगारा ज्यू राती
रगत रग/लपटा सी काढै,
करड-करड़ भळै
दांत पीसतो/होंट काटतो
गहरो गूंज्यो
मार कड़ीकड़ी
ठोक गदा सू
जघा चीरी
दुरजोजण री ।
जिण जघा पै
भरी सभा बिच
पाचाळी नै
बैठावण रो

गरज भयानक
घणो जोर
गैगाडा भरतो
कर्‌या पाधरा
मेठा दरगत
जीव जन्त/आगो बन राई.
जगम-जग नै
जड़ु बणायो
छिण भर माहो।

मुन्न वापरो
दसू-दिसा बिच,
हुयो अधारो
आज धरण पर,
समरागण सू
कोस-कोस लग
रुळै भोडक्या
रण-मल्ला री।
गोठ मनावै/कव-कवण्या
घूमर घालै,
पेड-पेड/गादड़िया हरखै
किरळ्या करतो

नाचै गावै ।

रुहिर-कीच में
रुण्ड राड रैया,
गिरज पड़ रैया
झपट-झपट
किरळाट्यां छोड़ै
काळा-काळा/दळ-बादळ ज्यूं
उमट्या आवै
आज कांवळा ।
ठौड़-ठोड़/ककाण्या चम्पै
चरण-भाल, चैरो
चोचा सूं
नर वीरां रो ।
केई जोगण्या
रगत चूंसती
चुगै भोडक्या
हरख मनावै,
बम-बम करता/भैरू नाचै
वाजै डेरू/डम-डम डम-डम,
घणण-घणण
घूंघरिया वाजै
चढ़ अरनारया

लंगता जावै
घणै ई हरख सूं
वळोवळी नै ।
भाग फूटग्या
मिनख देह रा,
मौजां माणै/गीध गादड़ा
आज धरण पै ।
गज देहां सू
ववै पनाळा,
लथ-पथ-रथ
घायल घिघयावै
हाथी–घोड़ा ।
करै सपाड़ा
गिड़क-गादड़ा
रुहिर-तळावा,
भट-बाका री
भीम-भुजा
लै, उडै गिरजड़ा,
थान-थान पै
आज निवाणा
छलिया दोसै
रगत-कुण्ड सा ।

महाकाल
मारी किलकारी
जुद्ध निवड़्यां
कुरु-खेत रो ।
बीजै पालै
मधुसूदण-पाण्डव
मजय रळ
जथा–जोग
उणियारा सारू
चिता रचाई
समर-भोम बिच,
सिरै–काठ
चन्दण–पीपळ री,
भळै रचाई
चुग सस्तर
भाला बरछी अर
तीर तूणीरा
रथ टूट्योड़ा
काठ-कबाड़ा/कर-कर भेळा
कैई ठौड़ पर
दाह करम-किरिय बीरां र
जोय-जोय/जेठै-नैनकड़ै

क्रम सू कीधी ।
धीजो टूट्यो/धरमराज रो
याको छूट्यो,
कुररी ज्यू
कुरळातो जावै
अनुजा समेत
कुन्द मना व्है
नीर वहावै ।
आख्या सू
ववै चौधारा,
विहू-दळा री
वेवा नार्‌या
डाढ़ी रोवै,
ठौड़-ठौड
ऊभी गरळावै
गिगन कपाव ।
केई नवोढा/कुन्द-कळी-सी
केस खिडायां/खाय पछाड़ा
छिन्न लता ज्यू
लटपटाय छिण
मरछित व्है-व्है
चेतो पावै ।

भर-भर गांवा
गणांडक रा

उतर्‌या जळ बिण
पाचू-पाण्डु ।
रूप-बुध बिसर्‌या
निज काया री,

अणथग नीर
बवै आंख्या सू
ध्यान धर्‌यो
बारी-बारी जद
महासमर मे/पोढ्योड़े
बांकै-बीरा री,

[illegible] [illegible], [illegible], मित्र अर
निज परिजन री ।
सारै में सारा
[illegible] [illegible]
उन्मादन-सी
न्हाटी आई
अभिमन्यु री मरै दुहाई
सौगन खानी
भर्रायी वाणी मे बोली–
"घुटं जीव–
सतवादी बेटा !
धरम राज !
थारी सौगन है,
आण म्हनै
इण गगोदक री
घुटं जीव !
आखी ऊमर ई
घणो घुट्यो
अब रह्यो नी जावै ।
लीली-लकडी ज्यू सिळगू
बरसा सू सिळगू
लावो हियै बिच

मूल-पूत/वद वरण
कृ ग रो/ प्रथम रत
हाय ! वाम विधा
    त्रिया गमायो

गम्यो नही लै !
वो दीम्यो है
कूट वोलगो
कटैई गम्यो नी.

    लै !
    वो आग्यो
    देख ! तीर पै
    ऊभो तैडे
    यन्नै, म्हनै
    इण सगळा नै
    घण हेताळू
    सेंग जणा नै
      वो बतळावै ।

काल रात सू ई
हाथ उठा वो
आभै कानी,

हेलो मार-मार यूं कैवै ---

लै !

सुण लै !

वो कंतो जावै

भळं जतावै–

'जामण !

थांरां पूत सम्भाळ्या

पांचूं प्यारा

अब म्है चाल्यो,

लै !

लंगग्यो वोऽ ··

हाय पूत !

हाऽ····करणऽ····

····करणऽऽ ···!!,

कैय-मुरछा आई

पड़ी धरण अणचेत

पंच-पाण्डु री माई।

★ ★ ★ ★

''गजब-गजब''

कंय जळ बिच डाढयो

जेठो-पाण्डु

माथो कूटै

निज हाथां सूं

'हाय मावड़ी !
गजब हुयो
कीकर इब रीझ
इण जग में हूं
मना मानसी, नीच घणी
[illegible]
धिक [illegible]
धिक-धिक
इण जीव-जाग में
[illegible]
हाय मावड़ी::
. .... "
"शान्त-शान्त
हे धरम राज !"
सहसा प्रगट्या हाट
सतवन्ती-नन्दण/चन्दण सू
चरचित देहि
महक्या करड़ा,
चौफेरी सीतळता छाई,
किसन-दैपायण
धीर गम्भीरां
इमरतसी वाणी बरसाई,

सातवों पर्व

पछतावै री पड़धुन

खारे समन्दर
महा गर्त बिच
छिटक पड़यो
हीरो लाखीणो
थात-थात मे,
हाय विधाता !
जो'सोरो छिण
कर नी पाई,
राम धुहाई,
मोत बगस दे
आज इण घड़ी,
ओ माता थू !
कुब्वेळा बिच
म्हनै क्यू पड़ी ?
धूड़ रळ गयो
मिनख जमारो

हाय मावड़ी !
खेल शेष सब,
काई बणै अब
किण भय सूं/म्हैं
भेद लुकायो/आखी ऊमर ।
आंखमीच(म्है)
छाती ऊपर
—भाठो मेल
टुरती रैयी
सुपनै दाई
ऊमर भर,
टग-पग / तेज रै
पु ज रो/तिरस्कार
पेंड-पेंड/टगर-मगर
झाकती/संयती रैयी
जाणै क्यू ?
बैवतो ग्यो
बाछळ-नीर
अणथाग/अणमोल
बेळा-कुबेळा
टप्-टप् टपूकड़ा
मोती सा/ढळकै हा

जीवण मरूथल रा
तपियोड़ा धोरां बिच
बूंद/मटियामेट-सी
भतूळियां उठै
घड़ी-घड़ी / पळ-पळ
झीणां-सा/झांई-मांई
पड़बिम्ब नाचै,
पड़धुनां गूंजै,
ऊंडै/अंध-कुवै बिच
"ओ कैड़ो अंधारो ?
अैकै ई/रीत सू
पायोड़ा पूत-फळ
अेक प्रिथा-पूत नै
बीजो /सूत-पूत क्यू ??

* * *

म्है लाई
मन्तर साज
न्यारू रतन अमोलस्या
पण पूछू
किण नै आज,

म्हारा दिव्य-मणि।
पंच-रतन सिरमौर
छटवों म्हारो
मिहिर-सुत,
कुण गजबी
लियो चोर
सबसू सखरो
दिव्य-रतन।

॥ इति ॥